ANUBHAVS

बापूराया, तू ही है मेरा माँ–बाप!

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com

– सुरेखा गायधनी

२२ दिसंबर २००६, मेरे लड़के श्रेयस का एन.डी.ए (नेशनल डिफेन्स अकेडमी) में सिलेक्शन होने का पत्र आया। २६ तारीख को हम उसे क्षडकवासला के कैम्प में छोड़कर आये। शरीर का दुबला, पतला, व्यायाम भी कभी ज़्यादा नहीं किया फिर भी केवल परमेश्वरी कृपा और इच्छाशक्ति के चलते उसकी नियुक्ति हो गयी थी। वहाँ के कठोर प्रशिक्षण के बारे सुनकर, मन पर काफी बोझ लेकर हम घूम रहे थे। मात्र १७ वर्ष की आयु, माँ को छोड़कर कहीं अलग रहा नहीं, इत्यादि मातृसुलभ विवंचनायें मेरे मन में थी। वह उस प्रशिक्षण को सकुशल पूरा कर सके, इसके लिये सभी मंदिरों में जाकर मनौली मान रही थी। हर आठ़ दिनों में जाकर उससे मिलना तो जारी ही था।

सबकुछ ठ़ीक ठ़ाक चल रहा था। तभी फरवरी महीने में कसरत करते समय लड़के की उंगली में फैक्चर हो गया हाथ पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। उसने मुझे १५ दिनों के बाद बताया। (परीक्षा का समय होने के कारण मैं दो हफ्ते तक वहाँ गयी ही नहीं थी।) इसी चिंतित अवस्था में मैं एक दिन मेरे नज़दीक रहने वाली देशपांडे मैडम के यहाँ (उनका लड़का भी एन.डी.ए. मे था।) पहली बार गयी ....

....और वह दिन मेरे जीवन का स्वर्णिय दिन साबित हुआ। क्योंकि वहींपर मुझे सद्गुरु श्रीअनिरुद्ध बापू के बारे में पता चला। वह बापू के बारे में बहुत कुछ बताते ही जा रही थी और मैं मंत्रमुग्ध होकर सुनती ही जा रही थी। उनका भी एकमात्र वहीं लड़का होने के बावजूद उन्हें किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं थी। उन्होंने सारी चिन्ताये उनके सद्गुरु बापू पर छोड़ रखी थी।

उनके मुँह से बापू महिमा सुनते सुनते धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि यदि वे बापू के भरोसेपर अपने लड़के को वहाँ छोड़ सकती है तो फिर मैं क्यों नही? उनके घर से निकलते समय मैंने बापू से मन:पूर्वक प्रार्थना की, कि ''बापू, अब मेरे बच्चे के तारणहार आप ही हो! तुम्ही बच्चे का ख्याल रखना।'' उसके बाद देशपांडे मैडम के कथनानुसार गुरुवार को बांद्रा,और शनिवार को उपासना में जाने लगी, संस्था की 'रामनाम'वही लिखने लगी और धीरे-धीरे पूर्ण विश्वास का अहसास होने लगा कि अब पहले जैसी चिन्ता नहीं होती है।

श्रेयस भी वहाँ पर खुश था। वहाँपर उसका मन लगने लगा था। बापू की ही कृपा से ही वह पहले सेमिस्टर की परीक्षा पास हो गया। वह जब छुट्टी के समय यहाँ आया, तभी एक गुरुवार को मैं उसे

प्रवचनस्थल पर लेकर गयी। रामनाम वही भी लिखने के लिये दि। दूसरे सेमिस्टर के दौरान फिजिकल ट्रेनिंग के समय उसने जी–जान से शुरुआत तो की परन्तु महीने भर में ही उसके पैरों मे काफी दर्द होने लगा। अत: वहाँ के अस्पताल मे भर्ती हो गया। बापू का नामस्मरण तो शुरु ही था। उससे ठीक होगा वह कैंप मे गया। एक पहाड़ पर से दौड़कर आते समय उसका पैर एक नुकीले पत्थर से टकरा गया ओर जोर से बापूऽऽ की आवाज लगाते हुये खिसकते हुये वह नीचे आ गया। पैरों में बूट होने की वजह से पाँव अंदर ही अंदर सूज गया परन्तु बापू की कृपा से मोच तक ही निबट गया। वापस वह तीन हफ्ते तक अस्पताल में रहा। देशपांडे मैड़म उनके लड़के को मिलने गयी थी तभी उन्हे यह पता चला, परन्तु श्रेयस ने उसने कहा कि यह बात मेरी माँ को मत बताना।

परन्तु बाद में जब मुझे पता चला तो मेरा टेन्शन इतना बढ़ गया कि ड़र के मारे मै हवालदिल हो गयी और अंतत: ज्योतिष का आधार लिया। एक मात्र सद्‌गुरु अपने प्रारब्धो पर मात कर सकता है बाकी ज्योतिषी आदि तो एक विशिष्ट मर्यादा के बाहर तुम्हारी मदद नहीं कर सकते, ड़र के मारे यह बात भी मै भूल गयी। उस ज्योतिषी ने साड़ेसाती का भय दिखाकर, लड़के को एन.डी.ए. से बाहर निकाल लेने की सलाह दी। अत: मै अगले रविवार को पूना गयी और उसके साथ बातचीत की तो उसने स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया। लड़के ने कहा,‘एन.डी.ए.मे चुने जाना कितना कठिन होता है, यह तुम जानती हो ना? मै वापस आने वाला नही हूँ। बापू है ना, वे देख लेंगे।’ मै निरुत्तर होकर वहीपर बापू–नंदाई के आगे नतमस्तक हो गयी और बापू से कहा, ‘यह बालक तुम्हारा ही है। थोड़ा जिद्दी है, अशक्त है। उसके बारे में जो कुछ तय करना है, वह तुम ही तय करो।’

बुरा समय अभी समाप्त नहीं हुआ था। प्रथम युनिट टेस्ट में श्रेयस केमिस्ट्री मे अनुत्तीर्ण हो गया। ‘अब तो पुर्नविचार करो’ ऐसा कहने वाले अनेक लोग मिले। परन्तु मैं शांत ही रही। गुरुवार के दिन बापू के प्रवचनों मे जाती रही। दर्शन के दौरान भीड़ मे से ही मनोमन उन्हे सबकुछ बताती रही और वे भी ‘‘मैं हूँ ना, तुम चिन्ता मत करो’’ कहकर स्टेज के ऊपर से हाथ हिलाकर आश्वासन देते रहते थे। उन्ही पर सारा भार छोड़ दिया।

अस्पताल में होने के कारण श्रेयस फिजिकल ट्रेनिंग की प्रॅक्टिस नहीं कर पा रहा था। वह फेल ही होगा, ऐसा सभी लोग कह रहे थे। मात्र वह रामनाम वही लगातार लिख रहा था। अंतत: फिजिकल ट्रेनिंग का दिन आ गया। रात में ही उसने मुझे फोन किया– ‘माँ, बापू से कहो।’ दूसरे दिन उदी लगाकर व बापू का फोटो जेब मे रखकर वह परीक्षा के लिये गया। वह बाकी सभी टेस्टों में तो पास हो गया परन्तु पाँव मे चोट के कारण वह ‘रोप’ पर नहीं चढ़ पा रहा था। आफीसर ने उससे कहा, ‘रोप में तू फेल हो गया है।’

तभी कौन जाने कैसे, ५ मिनीट बाद दूसरा एक अफसर आया और उसने उससे फिर से रोप पर चढ़ने के लिये कहा। और क्या आश्चर्य, थोड़ी देर पहले रोप पर ठ़ीक से चढ़ भी न सकने वाला लड़का इस बार तीन बार उपर चढ़कर नीचे आया। उस अफसर ने उसके पास होने की घोषणा की। तुरन्त ही उसने फोन करके मुझे बताया, 'माँ, बापू ने मुझे पास कर दिया।' यह सुनकर मैंने बापू के फोटो के सामने लोटांगण किया। सत्य है, यदि बापू मुझे नही मिले होते तो मेरा क्या हाल हुआ होता? यही विचार मन में आया।

वापस फायनल परीक्षा। नोटस् ले लिये, अभ्यास भी कर ही रहा था। परनतु पहले के मार्कस् की मी को भी पूरा करना था। परीक्षा तो हो गयी। परन्तु मन मुताबिक नहीं लिख सका था। काफी टेन्शन मे था। परिणाम आ गया। तभी दो सिनियरों ने उसके फेल होने की बात उसे बतायी। फिर टेन्शन। परन्तु रात मे १२ बज़े उसका फोन आया, 'अरे माँ मैं पास हो गया हूँ।' इतने दिनों का टेन्शन दूर हो गया और मैं श्रीसाईसच्चरित का ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ने बैठ़ गयी।

उसके आने तक रामनाम बहियाँ लिखकर पूरा करूँगी, ऐसा मैंने मन ही मन बापू से वादा किया था। आखरी वही के कुछ पन्ने बाकी थे। श्रेयस गुरुवार को आने वाला था। गुरुवार को सवेरे ही मैं वही पूरा करने के लिये बैठ़ गयी। १०.३० बजे बही पूरा करके बापू के फोटो के सामने रखी और नमस्कार किया कि तभी श्रेयस का फोन आया, ''माँ मैं बस मे बैठ़ गया हूँ, तीन बजे तक आ जाऊँगा।'' उसके आने के बाद खाना खाकर हम तुरंत ही प्रवचन सुनने के लिये बान्द्रा जाने के लिये निकल पड़े। शाम को बापू आये, तभी उनके दर्शन करने के लिये भीड़ में खड़े होने के दौरान किसी ने तो उसके हाथों मे फूल दिये। इसतरह उसे बापू पर पुष्पवृष्टी करने का भी अवसर मिला। श्रेयस और उसके दो साथी, निमिष देशपांडे व अर्जुन सावंत इन तीनों को 'श्रीगुरुक्षेत्रम्' में बापू के हाथों से उदी लेने का नंबर भी मिल गया।

गुरुक्षेत्रम् में बापू के सामने ही बैठ़ने को मिला। मैं बाहर से ही देख रही थी। अपने बच्चे को कितने करीब से बापू के दर्शन मिल रहे थे, इसी विचार से मन गद्‌गद् हो गया था तथा आँखें भर आयी थी। और क्या आश्चर्य, उसी समय वहाँ के स्वयंसेवकों में थोड़ी सी हलचल दिखायी दी। तभी पता चला कि नंदाई भी आ रही है। मेरी स्थिती तो पागलों जैसी हो गयी। साक्षात लक्ष्मी नारायण सामने! विठ्ठल रखुमाई के सामने, उनके कितने नज़दीक मेरा बच्चा बैठ़ा है। तभी नंदाई की आवाज में दत्तबावनी शुरु हो गयी। श्रेयस को 'दत्तबावनी' कंठस्थ है। दत्तबावनी का पाठ़ करते समय वह नंदाई की ओर ही देख रहा था। बाहर आने पर मुझसे बोला, 'माँ, नंदाई हमारी ओर देखकर कितनी मधुरता से मुस्कुरा रही थी।'

यह सुनकर मैं कृतकृत्य हो गयी। आज भी वह सारा उत्सव याद करने पर आँखे भर आती है। ऐसा लगता है कि कितनी छोटी-छोटी समस्याओं सें घबड़ाकर हम बापू-नंदाई को तक़लीफ दिया करते हैं। परन्तु डॉ. योगिन्द्रसिंह जोशी ने कहा ही है ना कि, 'वही' हमारे माँ-बाप हैं, अपने सुख-दु:ख तो हम उन्हीको बतायेंगे ना? उसकी याद करके मन शांत हो जाता है। परन्तु ऐसे सर्वसमर्थ माँ-बाप को छोड़कर हम ज्योतिषियों आदि के पीछे भागते है, केवल समस्याओं से छुटकारा पाने के उद्द्येश्य से तीर्थक्षेत्रों की यात्रायें करते रहते है।

कुठे शोधिसी रामेश्वर अन्, कुठे शोधिसी काशी।
हृदयातील भगवंत राहिला, हृदयातून उपाशी।

यह उक्ति उमारे प्रति सत्य साबित होती है।

अब श्रेयस तीसरे सेमिस्टर में पहुँच चुका है। अब तक श्रेयस आग में तपकर अच्छी तरह निखर चुका है और इसीलिये मन से मजबूत हो चूका है। अब समस्यायें आने पर भी उसे ड़र नही लगता। हर वक्त उसे मन:सामर्थ्य मिलता है। और बापू की कृपा से यथासमय समस्याओं का निवारण भी हो जाता है।

बापू, तुम्हारी प्रेरणा से ही और आशीर्वाद से ही सब बच्चे देश रक्षण के कार्य में गये है। उनपर सतत कृपादृष्टि बनाये रखना।

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com